बेटियों को सूरज की तरह बनाओ ताकि घूरने वाला जलकर खाक हो जाए- साध्वी सुगना बाईसा

श्रीमद् भागवत कथा में कृष्ण-रुक्मणी विवाह का वर्णनःछठवें दिन व्यास ने कंस वध, जरासंध युद्ध की भी चर्चा की, आस्था में डूबे श्रोता

पेटलावद - श्रीसंकट मोचन सरकार बरवेट के पवन सानिध्य में चल रही श्रीमद भागवत कथा के छटवे दिन एक अत्यंत सशक्त और प्रेरणादायक विचार को सभी श्रद्धुलुओ को समझाया। उन्होंने कहा कि बेटियों को कोमल या केवल सुंदरता का प्रतीक (चांद) बनाने के बजाय, उन्हें आत्मनिर्भर, निडर और प्रभावशाली (सूरज) बनाए। ताकि आपकी लड़कियों को सशक्त बनाना है ताकि वे घूरने वाली नज़रों का शिकार न बनें, बल्कि सम्मान प्राप्त करें।

व्यास पीठ से साध्वी जी ने आव्हान करते हुए कहा कि अपनी बेटियों को कोमल या केवल सुंदरता का प्रतीक चांद नही बनाए की लोग घूरते रहे। उन्हें आत्मनिर्भर, निडर और प्रभावशाली सूरज की तरह तेज बनाए ताकि देखने वाला जल कर खाक हो जाए। कहने का मतलब यह है की अपनी लड़कियों को सशक्त बनाना है ताकि वे घूरने वाली नज़रों का शिकार न बनें, बल्कि आप गर्व से नजरे उठा कर चल सको। भगवतकथा के छटे दिन की आरती प्रसादी का लाभ प्रवीण कुमार अशोक कुमार भटेवरा परिवार की ओर से लिया।इस अवसर पर पूर्व विधायक वालसीह मेड़ा, हनुमंत सिंह डाबरी, अग्निनारायण सिंह बोडायता, अजयपालडीह राठौर बरवेट, दुर्गादास मोटापाला, विपुल लोढ़ा सहित आसपास के जिले से श्रोता जन कथा श्रमण करने के लिए पहुंच रहे है।

श्रीमद् भागवत कथा अमृत महोत्सव के छठवें दिन भगवान श्री कृष्ण द्वारा कंस वध , जरासंध युद्ध और श्री कृष्ण ?रुकमणी विवाह का वर्णन किया गया । जहां कथा व्यास साध्वी के श्रीमुख से वर्णन सुन श्रोता भक्त भावविभोर हो गए । वहीं श्रीकृष्ण रूक्मणी विवाह में श्रोता भक्त बराती बन झूमे। जिसका नाट्य रूपांतरण की प्रस्तुति से श्रोता भाव विभोर हुए।

कथा को आगे बड़ते हुए बताया कि जब भगवान श्री कृष्ण बड़े हो जाते हैं तो वह कंस की जेल में बंद अपने माता-पिता देवकी वासुदेव को छुड़ाने के लिए कंस का वध कर छुड़ा लाए । कंस वध से नाराज़ कंस के ससुर मगध के राजा जरासंध श्री कृष्ण से बदला लेने के लिए मथुरा पर सत्रह बार हमला किया । हर बार श्रीकृष्ण भगवान और बलराम पराजित कर छोड़ देते थे लेकिन मारते नहीं थे ।

अट्ठारहवीं बार श्रीकृष्ण भगवान मथुरावासियों को द्वारका में ले जाकर बसाया । श्रीमद् भागवत कथा में भगवान श्रीकृष्ण पढ़ने गुरूकुल चले जाना , कालिया नाग का वध जरासंध युद्ध सहित अन्य भगवान की लीलाओं का वर्णन सुनकर भक्त भावविभोर हो गए ।

कथा व्यास सुगुणा बाईसा ने श्री कृष्ण विवाह का वर्णन करते हुए कहा कि भगवान श्रीकृष्ण के विवाह के लिए जब कोई नंदगांव आता तो उनकी बाल लीलाओं को सुना वापस कर देते थे । जब विदर्भ देश के राजा की बेटी रुक्मिणी को लेकर भगवान श्रीकृष्ण द्वारकाधीश गए जहां आधे द्वारकावासी बाराती बने वहीं आधे जनाती बने और श्रीकृष्णा रूखमणी का विवाह संपन्न करवाया।

माता पिता की पूजा ही सबसे बड़ी पूजा है

भागवत कथा के दौरान साध्वी जी ने माता-पिता की सेवा ही सबसे बड़ी पूजा है। जो व्यक्ति निस्वार्थ भाव से अपने माता-पिता की सेवा करता है, उसे तीर्थ यात्रा या भगवान की पूजा करने की आवश्यकता नहीं है। माता-पिता साक्षात देवता तुल्य हैं। उन्होंने कहा कि माता-पिता के चरणों में ही सारे तीर्थ हैं। उनकी सेवा से मिलने वाला पुण्य किसी भी पूजा से बहुत अधिक है। कहने का मतलब है कि जो संतान माता-पिता का सम्मान और सेवा करती है, उस पर भगवान की कृपा बनी रहती है। तू कितनी अच्छी है तू कितनी भोली है, मां... ओ मां.... भजन पर सभी श्रोता की आखों से अश्रु धारा बहने लगी।

गौहत्या हत्या प्रतिबंधित कानून बने

भागवत कथा में गौमाता के प्रसंग का वर्णन करते हुए कहा कि गौमाता आज भेड़ बकरियों की तरह काटी जा रही है।गौ हत्या पर रोकने के लिए एक कानून बनना चाहिए। ताकि गौहत्या पर नियंत्रण हो सके। साथ ही गौमाता को राष्ट्र माता का दर्जा दिया जाए। इसके लिए लिए संत समाज और विभिन्न संगठनों द्वारा देशव्यापी गौ सम्मान आवाह्न अभियान चलाया जा रहा है। 27 अप्रैल 2026 को गौ सम्मान दिवस मनाकर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्रियों को ज्ञापन सौंपे जाएंगे। सर्व हिंदू समाज को मुहिम से जुड़कर गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध और गाय को संवैधानिक दर्जा दिलाए।

जो रात को जागते है वो निस्शाचार होते है

भागवत कथा को आगे बड़ते हुए साध्वी जी ने कहा कि जो देर तक जागता वो निशाचर हो जाता है। जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। जिससे शरीर में बीमारिया पनप रही है।

रोजाना आदत तनाव बढ़ाती है। वर्तमान में मोबाइल भी निशाचर की संख्या बड़ा रहा है। इसीलिए अपने बच्चो को मोबाइल से दूर रखे या उनका ध्यान रखे।

विचार प्रवाह

क्या हम बना पाए डॉ. अंबेडकर के सपनों का न्यायपूर्ण भारत?

समानता का सपना और आज का भारत~ कितना आगे बढ़े हम?

शिक्षा, संघर्ष और सम्मान~ अंबेडकर के विचारों की आधुनिक प्रासंगिकता

नीले आकाश में लहराते झंडे, सड़कों पर उमड़ती भीड़ और स्मारकों पर पुष्पांजलि–हर वर्ष अंबेडकर जयंती (14 अप्रैल) का यह दृश्य राष्ट्रीय चेतना का उत्सव बन जाता है। लेकिन इस उत्सव के बीच एक गहरा प्रश्न खड़ा रहता है। क्या हम सच में उस भारत की ओर बढ़ रहे हैं, जिसका सपना डॉ. भीमराव अंबेडकर ने समानता, न्याय और सम्मान के आधार पर देखा था? आज विकास और तकनीक की प्रगति के बावजूद समाज में असमानता और अवसरों की दूरी क्यों बनी हुई है? यह विरोधाभास हमारी सामाजिक सच्चाई को उजागर करता है। अंबेडकर जयंती हमें श्रद्धांजलि से आगे आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती है–संविधान केवल दस्तावेज नहीं, बल्कि एक जीवित सामाजिक संकल्प है, जिसे हर पीढ़ी को अपने आचरण से साकार करना होता है।

डॉ. अंबेडकर का जीवन संघर्ष, ज्ञान और आत्मसम्मान की एक प्रेरक गाथा है। ऐसे समाज में जन्म लेकर जहाँ पहचान जन्म से तय होती थी, उन्होंने शिक्षा को अपनी सबसे बड़ी शक्ति बनाया। देश-विदेश के श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में अध्ययन कर उन्होंने साबित किया कि प्रतिभा किसी जाति या वर्ग की सीमाओं में बंधी नहीं होती। उनका संघर्ष केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं था, बल्कि पूरी व्यवस्था को चुनौती देने वाली बौद्धिक क्रांति था। उन्होंने जाति व्यवस्था को सामाजिक ढाँचे से अधिक मानव गरिमा पर आघात माना। आज भी आधुनिकता के इस दौर में भेदभाव के सूक्ष्म रूप उनके संघर्ष की याद दिलाते हैं। उनका जीवन स्पष्ट करता है कि परिवर्तन की शुरुआत विचारों से होती है, सुविधाओं से नहीं।

अंबेडकर का सबसे बड़ा योगदान भारतीय संविधान के निर्माण में उनके दूरदर्शी विचार हैं। वे केवल कानून निर्माता नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय के शिल्पकार थे। उन्होंने स्पष्ट कहा कि राजनीतिक लोकतंत्र तब तक अर्थहीन है जब तक सामाजिक लोकतंत्र स्थापित न हो। स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व केवल शब्द नहीं, बल्कि संतुलित समाज की नींव हैं। आज के भारत में डिजिटल क्रांति और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के बीच यह जरूरी है कि विकास का लाभ हर वर्ग तक समान रूप से पहुँचे। यदि सामाजिक असमानता बनी रहती है, तो संविधान की आत्मा अधूरी रह जाती है। उनका यह विचार आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना 1950 में था।

शिक्षा को लेकर अंबेडकर की सोच अत्यंत क्रांतिकारी और दूरदर्शी थी। उनके अनुसार शिक्षा केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि चेतना का विस्तार है। वे मानते थे कि शिक्षित व्यक्ति ही अपने अधिकारों को पहचान सकता है और अन्याय का विरोध कर सकता है। आज जब भारत डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और कौशल विकास की दिशा में आगे बढ़ रहा है, तब भी ग्रामीण और वंचित वर्ग की शिक्षा की स्थिति चिंता का विषय बनी हुई है। शिक्षा का असमान वितरण उनके सपनों के भारत की राह में बड़ी बाधा है। उनका संदेश ÷शिक्षित बनो, संगठित बनो, संघर्ष करो÷ आज भी युवाओं के लिए केवल नारा नहीं, बल्कि जीवन दर्शन होना चाहिए। शिक्षा ही वह शक्ति है जो अंधकार को प्रकाश में बदल सकती है।

महिलाओं के अधिकारों पर अंबेडकर का दृष्टिकोण अत्यंत प्रगतिशील था। उन्होंने हिंदू कोड बिल के माध्यम से महिलाओं को संपत्ति, विवाह और तलाक जैसे अधिकार दिलाने की मजबूत पैरवी की। उनका मानना था कि किसी भी समाज की प्रगति तब तक संभव नहीं जब तक उसकी आधी आबादी स्वतंत्र और सशक्त न हो। आज महिला सशक्तिकरण, समान वेतन और नेतृत्व में भागीदारी की बात होती है, जिससे स्पष्ट है कि अंबेडकर का दृष्टिकोण समय से आगे था। उन्होंने श्रमिकों और वंचित वर्गों के अधिकारों के लिए भी लगातार संघर्ष किया। उनका विचार था कि हर व्यक्ति को गरिमापूर्ण जीवन और सम्मानजनक रोजगार मिलना चाहिए। यह सोच आज के आर्थिक विकास मॉडल को अधिक मानवीय बनाती है।

अंबेडकर ने सामाजिक न्याय को लोकतंत्र की आत्मा माना। उनके अनुसार समाज तब तक स्वस्थ नहीं हो सकता जब तक उसमें समान अवसर और सम्मान का भाव न हो। जाति आधारित असमानता को उन्होंने ग्रेडेड इनइक्वालिटी (स्तरबद्ध असमानता) कहा, जो समाज को भीतर से कमजोर करती है। आज के भारत में विविधता को शक्ति के रूप में स्वीकार करने का प्रयास उनके विचारों की आधुनिक व्याख्या है। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या यह विविधता वास्तव में समानता में बदल पाई है? आज भी कई स्तरों पर भेदभाव और अवसरों की असमानता दिखाई देती है। अंबेडकर का संदेश स्पष्ट है–सच्चा लोकतंत्र वही है जहाँ अंतिम व्यक्ति भी समान अधिकारों के साथ खड़ा हो सके।

आज के भारत में जब हम वैश्विक मंच पर अपनी पहचान मजबूत कर रहे हैं, तब अंबेडकर की विरासत और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। आर्थिक विकास, तकनीकी प्रगति और अंतरराष्ट्रीय प्रभाव तभी सार्थक हैं जब आंतरिक समाज मजबूत और समान हो। उनका दृष्टिकोण केवल राजनीतिक सुधार तक सीमित नहीं था, बल्कि एक नैतिक समाज की स्थापना का था। युवाओं के लिए उनका संदेश आज भी मार्गदर्शक है कि परिवर्तन केवल नीतियों से नहीं, बल्कि सोच से आता है। यदि नई पीढ़ी उनके विचारों को अपनाए, तो सामाजिक विभाजन कम किया जा सकता है। उनका सपना एक ऐसे भारत का था जहाँ हर व्यक्ति सम्मान और अवसर के साथ आगे बढ़ सके।

अंबेडकर जयंती इतिहास को दोहराने का नहीं, बल्कि भविष्य को दिशा देने का क्षण है। यह केवल स्मरण का दिन नहीं, बल्कि आत्मचेतना को जगाने वाली पुकार है। यह हमें कठघरे में खड़ा करता है–क्या हम उस भारत की रचना कर पा रहे हैं, जिसका स्वप्न समानता और न्याय पर आधारित था, या फिर हम केवल औपचारिक श्रद्धांजलि में उलझे हुए हैं? 2026 का भारत प्रगति की तेज धारा में आगे बढ़ रहा है, लेकिन इस धारा को सभी तक समान रूप से पहुँचाना अभी भी सबसे बड़ी परीक्षा है। अंबेडकर का संदेश आज भी उतना ही तीखा और स्पष्ट है–समानता ही स्वतंत्रता की असली शर्त है। यदि उनके विचार केवल स्मृति नहीं, बल्कि व्यवहार बन जाएँ, तो एक न्यायपूर्ण और सशक्त भारत कोई सपना नहीं रहेगा, बल्कि वास्तविकता बन जाएगा।

कृति आरके जैन सृजनिका
बड़वानी (मप्र)

बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के जयंती जन्मोत्सव पर विभिन्न प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

महेश्वर ।(इंदौर समाचार सुनिल गाडगे)। डॉ भीमराव अंबेडकर की जयंती पर सांदीपनि विद्यालय में शासन के निर्देशानुसार विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।दिनांक 9 अप्रैल को हंसा कुशवाह के मार्गदर्शन में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कु. वर्षा चौबे 12 वीं प्रथम स्थान एवं प्राची कर्मा 10 वीं द्वितीय स्थान पर रही ।10 अप्रैल को शिक्षक जितेन्द्र भालसे के मार्गदर्शन में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कु. रितु यादव 9 वी प्रथम एवं कु दिशा गोखले 9 वीं द्वितीय स्थान पर रही । 11 अप्रैल को चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन मंजुला दुबे के मार्गदर्शन में किया गया जिसमें कु खुशी प्रथम एवं भावेश अत्रे 12 वीं द्वितीय स्थान पर रहे । सोमवार को कक्षा 11 वीं के विद्यार्थियों ने डॉ.अंबेडकर जी के जीवन पर आधारित भावपूर्ण नाटक प्रस्तुत किया जिसका मार्गदर्शन शिक्षक मनोज बिरला एवं शुभम शर्मा ने किया ।प्राचार्य बिरजू गुप्ता ने विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किए एवं डॉ बाबासाहेब के चित्र पर माल्यार्पण किया एवं डॉ अंबेडकर के जीवन से सीख लेते हुए शिक्षा का महत्व रेखांकित किया ।वरिष्ठ शिक्षक सायबा सोलंकी ने संविधान का महत्व बताया।संचालन व्याख्याता राजकुमार शर्मा ने किया ।

डिजिटल दौर में भी जिंदा है ग्रामोफोन का जादू, महेश्वर के बख्शी राम यादव बने मिसाल

महंगे रिकॉर्ड्स के बावजूद जुनून बरकरार डिजिटल युग में विरासत को जीवित रखने का प्रयास

महेश्वर। (इंदौर समाचार सुनिल गाडगे)। तकनीक के इस आधुनिक दौर में जहां हर कोई मोबाइल और इंटरनेट के जरिए संगीत और फिल्मों का आनंद ले रहा है, वहीं नगर के समाजसेवी और पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष बख्शी राम यादव पुराने जमाने की उस धरोहर को आज भी संजोए हुए हैं, जिसे लोग लगभग भूल चुके हैं! ग्रामोफोन यानी रिकॉर्ड प्लेयर, जिसकी शुरुआत 1877 में हुई थी और जिसने एक समय पूरे विश्व में संगीत सुनने का तरीका बदल दिया था, आज वही ग्रामोफोन बख्शी राम यादव के लिए केवल एक मशीन नहीं बल्कि उनका जुनून बन चुका है! बख्शी राम के पास पुराने दौर की फिल्मों के दुर्लभ और ऐतिहासिक रिकॉर्ड्स का बड़ा संग्रह है, जिनमें कई ऐसे गाने भी शामिल हैं जो आज डिजिटल प्लेटफॉर्म पर आसानी से उपलब्ध नहीं हैं! इसके साथ ही उन्होंने नई फिल्मों के गानों के रिकॉर्ड भी अपने कलेक्शन में शामिल किए हैं, इतना ही नहीं उनके पास पुरानी फिल्मों की सीडी का भी विशाल संग्रह मौजूद है! इस शौक को जिंदा रखना आसान नहीं है, क्योंकि एक-एक रिकॉर्ड की कीमत हजार से लेकर दो हजार रुपए तक होती है, लेकिन अपने इस जुनून के चलते बख्शी राम लगातार नए-नए रिकॉर्ड्स जुटाते रहते हैं और ग्रामोफोन पर उन्हें सुनने का आनंद लेते हैं! वे समय-समय पर इन रिकॉर्ड्स के साथ प्रयोग भी करते रहते हैं ताकि इस पुरानी तकनीक को नई पीढ़ी तक पहुंचाया जा सके! आज जब यूट्यूब और पेन ड्राइव ने संगीत की दुनिया पर पूरी तरह कब्जा कर लिया है, ऐसे में बख्शी राम यादव का यह अनोखा शौक न सिर्फ पुरानी यादों को ताजा करता है बल्कि नई पीढ़ी को भी यह संदेश देता है कि हमारी सांस्कृतिक विरासत को सहेजना कितना जरूरी है। उनका यह प्रयास उन्हें नगर में एक अलग पहचान दिला रहा है और लोग उनके इस जुनून की सराहना भी कर रहे हैं!

प्रेस क्लब जोबट के 'स्नेह मिलन' समारोह में सांसद, विधायक और एसपी की मौजूदगी में 'कलम साधना' एवं 'सेवा साधना' सम्मान से नवाजी गईं जिले की हस्तियाँ

आलीराजपुर (सजप ट वली) जोबट की धरा पर रविवार की शाम पत्रकारिता के गौरव और जन-सेवा के ज'बे के नाम रही। प्रेस क्लब जोबट द्वारा आयोजित 'स्नेह मिलन एवं सम्मान समारोह' में राजनीति, प्रशासन और पत्रकारिता जगत के दिग्गजों ने एक ही मंच पर शिरकत की। कार्यक्रम की भव्यता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि कार्यक्रम में क्षेत्र की लोकप्रिय सांसद, विधायक सहित जिले के आला अधिकारी और वरिष्ठ पत्रकार समेत गणमान्य नागरिक साक्षी बने।

वंदे मातरम के गान से गूंजा परिसर–समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि सांसद अनिता चौहान, विधायक सेना पटेल एवं अन्य अतिथियों द्वारा मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। इसके पश्चात सामूहिक रूप से 'वंदे मातरम' का गान किया गया, जिससे पूरा परिसर देशभक्ति के स्वर से गुंजायमान हो उठा। मंच पर पूर्व विधायक माधोसिंह डावर, एसपी रघुवंश सिंह भदौरिया, वरिष्ठ पत्रकार चन्द्रभान सिंह भदौरिया, नगर परिषद अध्यक्ष राहुल मोहनिया, जिला प्रेस क्लब अध्यक्ष राकेश तंवर एवं प्रेस क्लब जोबट अध्यक्ष राजेश डुडवे मंचासीन रहे।

अतिथियों ने कहा~ पत्रकारिता समाज का दर्पण और लोकतंत्र की शक्ति–संबोधन की कड़ी में सांसद अनिता चौहान ने कहा कि पत्रकार समाज की आवाज होते हैं और कठिन परिस्थितियों में भी सत्य को सामने लाते हैं। विधायक सेना पटेल ने कलम की शक्ति को रेखांकित करते हुए क्षेत्र के विकास में पत्रकारों के सहयोग की सराहना की। एसपी रघुवंश सिंह भदौरिया ने कहा कि पुलिस और पत्रकार दोनों का लक्ष्य समाज में न्याय और सुरक्षा सुनिश्चित करना है। वरिष्ठ पत्रकार चन्द्रभान सिंह भदौरिया ने पत्रकारिता के मूल्यों और निष्पक्षता पर प्रकाश डालते हुए युवा पत्रकारों का मार्गदर्शन किया। वहीं नगर परिषद अध्यक्ष राहुल मोहनिया और जिला अध्यक्ष राकेश तंवर ने प्रेस क्लब जोबट के इस अनूठे आयोजन को जिले के लिए एक उपलब्धि बताया।

कलम के धनी वरिष्ठ पत्रकारों का हुआ कलम साधना सम्मान–कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण में जिले के उन वरिष्ठ पत्रकारों का सम्मान रहा जिन्होंने दशकों से अपनी लेखनी से समाज को जागरूक किया।

'कलम साधना सम्मान-2026' से लक्ष्मीकांत जोशी (जोबट), जगराम विश्वकर्मा (आंबुआ), गोपाल मेलाना (आलीराजपुर), मोहम्मद अफजल सय्यद (उदयगढ़), अशोक हिंदुस्तानी (बड़ी खट्टाली), वीरेंद्र जैन (भाभरा), राकेश तंवर (आलीराजपुर), मनीष जोशी (जोबट) और प्रदीप क्षीरसागर (नानपुर) को स्मृति चिन्ह देकर नवाजा गया।

सेवा के नायकों को मिला सेवा साधना सम्मान–पत्रकारिता के साथ-साथ समाज सेवा, प्रशासन और पर्यावरण के क्षेत्र में मिसाल पेश करने वाले 10 कर्मवीरों को 'सेवा साधना सम्मान' प्रदान किया गया। इसमें चिकित्सा क्षेत्र से डॉ. नरेंद्र मोरी, डॉ. अमित दलाल, सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था के लिए टीआई विजय वास्कले, सामाजिक कार्यों के लिए नितेश अलावा, भुपेंद्र बामनिया, सुरपाल अजनार, दीपक दीक्षित को सम्मानित किया गया। वहीं नगर की स्वच्छता और विकास के लिए नगर परिषद जोबट को सम्मानित किया गया, जिसे अध्यक्ष राहुल मोहनिया और सीएमओ संतोष राठोड़ ने ग्रहण किया। पूरे कार्यक्रम का सफल और ऊर्जावान संचालन कवि फिरोज सागर (जोबट) द्वारा किया गया। अंत में प्रेस क्लब जोबट के चयन खत्री ने आभार व्यक्त किया।

कार्यालय जनपद पंचायत कसरावद, जिला खरगोन म.प्र.

Email ID-JPKASKHR@MP.NIC.IN PHONE 07285-231542)

क्रमांक /7182 / मु.म.क.वि./26 कसरावद, दिनांक 13/4/2026

विज्ञप्ति

जनपद पंचायत कसरावद द्वारा दिनांक 20.04.2026 को कृषि उपज मण्डी परिसर बोरावा में अनुमानित 57 जोड़ो का मुख्यमंत्री कन्या सामुहिक विवाह का आयोजन किया जाना है। जिसमें निम्नानुसार व्यवस्था किये जाने हेतु निविदा जारी की जा रही है।

1. टेंट व्यवस्था में भाषण मंच 12 × 40 (फ्लोरिंग सहित) एवं 15 × 40 (फ्लोरिंग सहित) टेंट भोजन बनाने एवं खाने हेतु 90 × 105, पांडाल में टेंट 30 × 60 सफेद चद्दर 25 नग, कुर्सी प्लास्टिक पीवीसी 300 नग, गद्दे 120 नग, चटाई (15 × 30) 25 नग, कार्पेट (15 × 150) बड़े कुलर 6 नग, वर वधु के पांडाल में पानी के फव्वारे, लग्न हेतु हवन कुण्ड 57 नग, कनात (6 × 15) 25 नग (अनुमानित लागत राशि रू. 105000/-)
2. भोजन एवं केटरिंग व्यवस्था बुफे पद्धती अनुसार मैनु तुअर दाल, चावल, पुडी, चना दाल की सब्जी, बुंदी (नुक्ती) अनुमानित संख्या 4000 व्यक्तियों की संपूर्ण व्यवस्था। (अनुमानित लागत राशि रू. 180000/-)
3. साउण्ड हार्न 10 नग, स्पीकर 8 नग माईक कार्डलेस सहीत 10 नग जनरेटर डीजल सहीत 1 नग एलईडी लाईट 10 नग। (अनुमानित लागत राशि रू. 12000/-)
4. फोटोग्राफी 80 फोटों करिश्मा एल्बम सहीत एवं विडियों ग्राफी संपूर्ण कार्यकम की 1 घंटा 30 मिनट की सीडी तैयार करना ड्रोन केमरे सहित। (अनुमानित लागत राशि रू. 10000/-)

इच्छुक निविदाकर्ता जारी दिनांक से दिनांक 17.04.2026 को दोपहर 03.00 बजें तक निविदा फार्म जनपद पंचायत कार्यालय की लेखा शाखा में जमा कर सकते है। तथा इसी दिनांक को सायं 4.00 बजें निविदा जनपद पंचायत कसरावद कार्यालय में खोली जावेगी। अंतिम निर्णय कार्यालय का रहेगा।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत कसरावद